**International Journal of Hindi Research**
**www.hindijournal.com**
**ISSN: 2455-2232**
**Received: 28-03-2022, Accepted: 14-04-2022, Published: 29-04-2022**
**Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 76-78**

# आगामी अतीत और मानवीय संबंधों का विघटन

**मुहम्मद महताब खाँ**
इंटरनेश्नल इंडियन स्कूल, तबुक, सऊदी अरब

**सारांश**
आगामी अतीत का शाब्दिक अर्थ यह है कि वह अतीत जो भविष्य में हमारे समक्ष पुनः उपस्थित हो जाये। प्रस्तुत उपन्यास का नायक अपनी महत्वाकांक्षी प्रवृत्ति के कारण पूंजीवाद की गिरफ्त में फंसता चला जाता है। हम जानते हैं कि पुंजीवाद सबसे पहले हमारी संवेदना को समाप्त करता हैं। संवेदना की मृत्यु पर ही पूंजीवाद का समूचा वृक्ष खड़ा है जहाँ मानवीय संबंधों का कोई मूल्य नहीं है। इसके साथ जब महत्वाकांक्षा का समागम होता हैं तो व्यक्ति का मूल्य और मानवीयता बहुत पीछे छूट जाते हैं। लेकिन जब इस मदिरा का नशा उतरता है तब अनुभव होता है कि हमने क्या खोया है। इस उपन्यास का नायक कमल बोस भी इसी चकाचौंध के पीछे भागता रहता है और बहुत कुछ पीछे छोड़ देता है। उसके लिए रिष्ते नाते, यहाँ तक प्रेम भी व्यर्थ लगने लगते हैं। लेकिन कहते हैं कि व्यक्ति का अतीत पलटकर वापस ज़रूर आता है। कमल बोस का अतीत भी उसके भविष्य में प्रकट होता है और उसके पास पछताने के सिवा कुछ नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब उसे धन–संपदा की नहीं बल्कि जन–संपदा की ज़रूरत पड़ती है और ऐसी स्थिति में वह पीछे मुड़कर देखता है कि इस दौड़ में उसे ठोकर कहाँ लगी थी जिसकी अनुभूति वह नहीं कर सका। आगामी अतीत उपन्यास का आधारबिंदु यही अपराधबोध है।

**मूल शब्दः** चाँदनी, आधुनिक, पूँजीवाद, संवेदना, उपेक्षित

## प्रस्तावना
यह कमलेश्वर का बहुचर्चित उपन्यास है 'काली आँधी' और 'आगामी अतीत' दोनों उपन्यास एक लम्बे अरसे के बाद लिखे गये थे। 'आगामी अतीत' में कमलेश्वर ने असफल सम्बन्धों की परिणति का मार्मिक रूप पेश किया है। आज के सामन्तवादी और पूँजीवादी, सामाजिक व्यवस्था के ग़लत और घातक तरीकों को अपनाकर सफलता कैसे मिली है इसका चित्रण 'आगामी अतीत' में हुआ है। इस का नायक 'कमल बोस' अनेक उचित–अनुचित और सही–ग़लत मार्गों को अपनाकर अभूतपूर्व यश और कीर्ति प्राप्त करता है, किन्तु इस यश और कीर्ति को प्राप्त करने के पष्चात् भी कुछ ऐसा है जो कमल बाबू को भीतर ही भीतर कचोटता रहता है। कोई ऐसा भी है जो उसे बार–बार याद आता रहता है। 'काली आँधी' की नायिका मालती की भाँति कमल बोस भी पूँजीवादी व्यवस्था की उन महत्वाकाक्षाओं के शिकार हुए हैं, जो अपने स्वार्थ के लिए आम आदमी का इस्तेमाल करने से किसी प्रकार का पथ्य नहीं रखते।
आधुनिक नगरों की निकट से देखे जीवन इनमें निवास करने वाले व्यक्तियों के दुःख–दर्द, उनकी आशा–निराशा, आकांक्षायें, अभाव और व्यथा सभी को इस उपन्यास में बड़े ही सहज और स्वाभाविक ढंग से उद्घाटिक किया गया है। कमलेश्वर ने इस उपन्यास में वैचारिकता और भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति के साथ ही कोमल और कठोर भावों को व्यक्त किया है। मनुष्य के भीतर जितनी भी अच्छी और बुरी बातें होती हैं, उन सभी की अत्यन्त तीव्र अभिव्यक्ति इस लघु उपन्यास में मिलती है। कमलेश्वर ने इस रचना में बिखरते और टूटे मूल्यों की प्रक्रिया को मध्यवर्गीय परिवार के सन्दर्भ में चित्रित किया है इस सन्दर्भ में कृष्ण जी कहते हैं– ''कमलेश्वर के उपन्यासों की कथा भूमि जीवन के यथार्थ को अपने वास्तविक रूप में चित्रित करती है। उनकी यह कथाभूमि स्थितियों और पात्रों के माध्यम से विष्वसनीय लगती है, कहीं भी कृत्रिम या आरोपित नहीं होती। उपन्यासों का यह परिवेश 'वस्तु' के अनुकूल है। उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में मानवीय पक्ष को संवेदना के धरातल पर सहजता और कलात्मकता से रूपायित किया है।''[1] इस प्रकार मध्यवर्गीय परिवार को सन्दर्भ बनाकर उन्होने इस रचना में बिखरते और टूटते हुए जीवन मूल्यों की प्रक्रिया को बहुत अच्छी तरह उद्घाटित किया है।
आगामी अतीत में कमलेश्वर ने उपेक्षित व्यक्तियों की ज़िन्दगी का चित्रण किया है। इस रचना को पढ़ने के पष्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक ने उपेक्षा का जीवन व्यतीत करने वाले पात्रों को चित्रित किया है। समाज से उपेक्षित निम्न वर्ग और आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्ग में व्यक्तियों के जीवन को सही अर्थ में अभिव्यक्त किया है।
इसका स्वाभाविक चित्रण लेखक ने अपने लघु उपन्यास में किया है– ''कमलेश्वर ने आगामी अतीत उपन्यास में क़स्बे की वैष्याओं के ज़िन्दगी को अत्यन्त सूक्ष्मता एवं स्वाभविकता से अंकित किया है उनके जीवन में आर्थिक संकट के कारण कितनी कटुता आ गयी है। लेखक ने सहज और यथार्थ चित्रण करके उनकी दारूण कथा दयनीय परिस्थितियों को पाठक के सामने रखा है, जो उनकी भाषा से स्पष्ट हो जाता है।''[2] कमलेश्वर ने सदा ही जीवन के कटु यथार्थ को समाज के सम्पूर्ण परिवेश के साथ अभिव्यक्त किया है। चाँदनी के रूप में जिस नारी पात्र का चित्रण कमलेश्वर ने किया है वह निष्चय ही प्रशंसनीय है। वैसे कमलेश्वर के सभी उपन्यासों में नारी की व्यथा, पीड़ा, अभाव और मानसिक असन्तोष को अभिव्यक्ति मिली है किन्तु 'आगामी अतीत' की चाँदनी को गढ़ने में उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय ही दिया है। चाँदनी का यह कथन उनकी यथार्थ स्थिति और विवशता को सहज रूप से प्रकट करता है–"हाँ ! ठीक कह रही हूँ तुम

अमीरों के ये इष्क–विष्क के चोंचले अपने लिए बेकार हैं। हम इष्क नहीं करते, पेट भरते हैं पेट ! पाँच मिनट में एक आदमी फ़ारिग होता है समझे ! चले आते हैं, मरदुए ! इष्क लड़ायेंग...अबे, यहाँ धंधा होता है, धंधा इष्क नहीं...अगली बार आना बच्चू तो जेब गरम और कमर पुख्ता करके आना..।''[3] चाँदनी का कथन उसके यथार्थ भोगे हुए जीवन की कटु अभिव्यक्ति है। जीवन को वह किसी तरह से जी ही नहीं रही, बल्कि पूरे संघर्ष के साथ जुड़ी हुई है। उसे न तो किसी से शिकवा हे और न ही किसी से शिकायत। जो कुछ वह अब तक देखती और सहती आयी है, उसके कारण उसके व्यक्तित्व में एक अजीब सी धार आ गयी है। जिससे उसके व्यक्तित्व को प्रखर बनाया है। चाँदनी के जैसा सजीव और प्रभावी पात्र अन्यत्र कदाचित ही देखने को मिलते है इस विषय में डा0 वीरेन्द्र का यह कथन उल्लेखनीय है–''आगामी अतीत उपन्यास की एक अन्य विशेषता यह है कि वह हमारे समक्ष चाँदनी जैसा जीवन्त और जीवट भरा नारी पात्र प्रस्तुत कर सका है। वस्तुतः चाँदनी का चरित्र एक ऐसा चरित्र है जो दूसरे किसी भी हिन्दी उपन्यास में देखने को नहीं मिलता। और आष्चर्य इस बात का है कि कमलेश्वर ने उसे अपने अभिव्यक्ति कौशल से बिल्कुल सजीव रूप से उपन्यास के पृष्ठों पर खड़ा कर दिया है।''[4] चाँदनी का अनूठा व्यक्तित्व सम्पूर्ण उपन्यास पर छाया हुआ है। उसके द्वारा कहा हुआ प्रत्येक वाक्य उसकी अन्तर्मन की व्यथा को हृदय में हुई पीड़ा और साथ ही साथ उसके वर्ग चरित्र को प्रकाश में लाता है। चाँदनी जो प्रतीक है। समाज द्वारा उपेक्षित और कुत्सित दृष्टि से देखी जाने वाली वैष्या का निरूपण कमलेश्वर ने बड़ी खूबी से किया है। चाँदनी जिस वर्ग की है उस वर्ग की स्थिति अत्यन्त करूण और दयनीय है। किसी तरह अपने शरीर को बेचकर जीवित रहने का प्रयास यह वर्ग कर रहा है। चाँदनी के द्वारा उस वर्ग की व्यथा, पीड़ा और दयनीय स्थिति का चित्रण कमलेश्वर ने करवाया है। अपनी विवशता को प्रकट करते हुए चाँदनी ने जो वाक्य कहा वह ठीक है–''अच्छा अब तू जाता है कि नहीं ! पिंड तो छोड़! जैसे–तैसे पेट पालते है हम लोग। क्यों पेट पर लात मारने चला आता है...''[5] चाँदनी के यह वाक्य न केवल उसके आक्रोश, असन्तोष या व्यथा को व्यक्त करते हैं बल्कि प्रेम केवल भौतिक या शारीरिक हद तक ही सीमित नहीं रहता उसका आर्थिक पक्ष भी रहता है, यह भी बताता है वर्तमान युग की आर्थिक विषमता ने चाँदनी के वर्ग को कितना त्रस्त कर दिया और वह वर्ग किस भीषण स्थिति को पहुँचा है उसे प्रभावी ढ़ग से स्पष्ट किया गया है। आज चाँदनी के सन्दर्भ में प्रेम न तो अलौकिक आनन्द को देने वाला है और न ही शारीरिक बल्कि वह जीवन गुज़ारने का आर्थिक साधन बन गया है। इसी भाव को व्यक्त करती हुई चाँदनी कहती है–''अरे बाबू कए दिन सबको ईष्वर के यहाँ जवाब देना पड़ता है। धंधा करूँगी तो पैसा लूँगी। ये मामूली काम नहीं है बाबू बहुत पित्ता मारकर अनजाने आदमी को सहना होता है। तुम औरत होते तो समझा पाते। हज़ार आदमियों के साथ एक–एक बार सोना और एक आदमी के साथ हज़ार बार सोना इसका फरक़ तुम नहीं समझ सकते। इसे औरत ही समझ सकती है।''[6] यही अर्थ जो आज समाज का आधार बन गया है, वर्ग का निर्माण करता और इसी कारण वर्ग संघर्ष की बात पैदा होती है।

चाँदनी के बाद इस उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र है 'कमल बोस'। कमल बोस की महत्वाकांक्षा उसे चैन से बैठने नहीं देती। वह हर सही ग़लत तरीकों को अपनाकर बड़ा आदमी बनना चाहता है और राजनीति में उसकी घुस–पैठ कुछ ऐसी होती है कि वह ीघ्र ही वास्तव में बड़ा आदमी बन जाता है। राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिये वह कभी किसी और की बात नहीं सोचता है। वह केवल स्पर्द्धा के इस युग में दौड़ता रहता है और सफल होता जाता है। क्योंकि सफल होने के लिये जिन गुणों का होना अनिवार्य है वे सब उसमें आने लगे है यही कारण है कि प्रशान्त उसके विषय में स्पष्ट कहता है–''तू फर्स्ट आया था...बस, वहीं से तू कतई दूसरी तरफ से सपने बुनने लगा था। प्रतियोगिता। इस बेहूदे कपिटीशन की दौड़ में तू शामिल हो गया था। इस मुकाबले की दौड़ में जीतने के लिए सिर्फ़ अक़्ल और तेज़ी ही नहीं चाहिए। इसमें जीतने के लिए वो सब चीज़े चाहिए, जो एक सफल होने वाले आदमी के लिए बेहद ज़रूरी होती हैं–एक खूबसूरत बीबी चाहिए। पैसा चाहिए ऊँची रिष्तेदारी चाहिए...और सबसे बड़ी चीज़ जो चाहिए वह यह कि मुक़ाबले की इस दुनिया में सफल होने के लिए, उसे दूसरे के जज़्बातों का कोई ख़्याल नहीं करना चाहिए।''[7]

इस प्रकार हम देखते हैं कि चरित्रों के माध्यम से कमलेश्वर ने पूँजीवादी षड्यंत्र का पर्दाफाश किया है। अवसरवादी चरित्र के रूप में जहाँ कमल बोस दिखाई देता, वहाँ अन्त में उसे इस बात का दुःख भी है कि जहाँ वह पहुँचने की बहुत बड़ी कीमत उसे चुकानी पड़ी है। उसे अपने ही लोगों को खोना पड़ा है। जिसमें वापस आने की उसकी चाह है पर कुछ भी करने में असमर्थ है। दुविधा और संषर्घ से परिपूर्ण ऐसे पात्र बहुत कम देखने को मिलते हैं। डॉ0 सुरेश सिन्हा ने इसके महत्त्व को दर्शाते हुए लिखा है–''उसके उपन्यासों में आज के नवीन सामाजिक सन्दर्भों का चित्रण बड़ी कुशलता से हुआ है। आधुनिक जीवन गतिशीलता, परिवर्तनशीलता, नवोन्मेष का भावना, ध्वंसोन्मुख मध्यवर्गीय जीवन के बहुविविध पक्षों आधुनिक युग बोध एवं विराट मानवीय चेतना का कमलेश्वर ने बड़ी कुशलता एवं कलात्मकता से चित्रण किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में चित्रण के लिए जीवन का विशाल चित्रपट चुना है और विभिन्न परिपार्ष्व को उनकी यथार्थवादी दृष्टि ने अत्यन्त समक्ष एवं सशक्त अभिव्यक्ति दी है।''[8] यही कारण है कि कमलेश्वर के उपन्यास पाठकों के मन और मस्तिष्क पर एक लम्बे अरसे तक असर बनाये रहते है और उनके द्वारा निर्मित चरित्र पाठक भुलाये नहीं भूलता। नारी और पुरुष के सम्बन्धों को उन्होंने नितान्त नये ढंग से और सही तरीके से अभिव्यक्त किया है। स्त्री–पुरुष सम्बन्धों के पुराने सारे आयामों को तोड़कर उन्होंने उसे नवीन परिवेष में प्रस्तुत किया है।

कमलेश्वर ने अपने हिन्दी उपन्यासों को एक नयी भाषा तो दी ही साथ ही उन्होंने उनके माध्यम से एक नया मुहावरा गढ़ा और अलग पहचान बनाई है। उनकी रचना में भाषा का एक आत्मीय बोध दिखाई देता है जो रचना को स्वाभाविक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। उनकी भाषा में एक प्रकार की चित्रात्मकता है और उसके साथ उसका अपना एक निखार है। इस उपन्यास की भाषा में एक ओर जहाँ सूक्ष्मता है तो दूसरी ओर उसमें हल्की रेखाओं का प्रभाव भी है। उनकी भाषा में सूक्ष्म संवेदनशीलता के साथ–साथ सरल और सूक्ष्म मूर्तता है और यही उनकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है। कम से कम शब्दों में सम्पूर्ण परिवेश पूरे अर्थ के साथ व्यक्त करने का सामर्थ्य कमलेश्वर की भाषा में है। जिस मानवीय जीवन का चित्रण यही कमलेश्वर के उपन्यासों की अपनी निजी विशेषता है।

## सन्दर्भ

1. कृष्णा कुरडिया, कमलेश्वर,1980 पृष्ठ 201

2. वही, पृष्ठ 201
3. कमलेश्वर, आगामी अतीत, समग्र उपन्यास, प्रथम संस्करण 2003, पृष्ठ 500
4. मधुकर सिंह, कमलेश्वर, 1980, पृष्ठ 195
5. कमलेश्वर, आगामी अतीत, समग्र उपन्यास, प्रथम संस्करण 2003, पृष्ठ 487
6. वही, पृष्ठ 501
7. वही पृष्ठ 468
8. डॉ0 सुरेश सिन्हा, हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास, 1965, पृष्ठ 558